दक्षिण भारत में संगम काल

भारत के सुदूर दक्षिण में कृष्णा एवं तुंभद्रा नदियों के मध्य स्थित प्रदेश को 'तमिलकम प्रदेश' कहा जाता है। इस प्रदेश में अनेक छोटे-छोटे राज्यों का अस्तित्व था, जिनमें चेर, चोल एवं पाण्ड्य राज्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण थे। धुर दक्षिण में पांड्य राज्य था। जिसकी राजधानी मदुरै थी।

यहां संगम का अर्थ है संघ, परिषद, गोष्ठी अथवा संस्थान अर्थात संगम तमिल कवियों, विद्वानों, आचार्यो, ज्योतिषियों एवं बुद्धिजीवियों की एक परिषद थी। इन परिषदों का आयोजन पाण्ड्यों राजाओं के राजकीय संरक्षण में किया गया।

संगम का महत्वपूर्ण कार्य होता था उन कवियों व लेखकों की रचनाओं का अवलोकन करना जो अपनी रचनाओं को प्रकाशित करवाना चाहते थे।

संगम साहित्य दक्षिण भारत के इतिहास जानने के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

संगम युग के तिथि निर्धारण

श्री निवास अयंगर	-	500 BC – 500 AD
वी. आर. दीक्षितर		
नीलकंठ शास्त्री (सर्वाधिक मान्य)	-	100 BC – 300 AD
पेयपुरी पिल्लै के अनुसार	-	300 AD – 500 AD
एन. सुब्रामण्यम अय्यर	-	300 BC – 100 AD
रामशरण शर्मा	-	300 AD – 600 AD

संगम साहित्य में सर्वाधिक विवरण चेर राजाओं का है।

आठवीं शताब्दी में इरय्यनार अगप्पोरूल ने भाष्य लिखा जिसमें तीनों संगमों का विवरण है। इसके अनुसार ये तीनों संगम 9990 साल चले और इसमें 8598 कवियों ने भाग लिया। इसका आयोजन 197 पांड्य राजाओं ने किया। परन्तु यह अतिशयोक्ति प्रतीत होती हैं।

प्रथम संगम

आयोजन स्थल	-	मुदुरा (अब समुद्र में विलीन)
अध्यक्ष	-	अगस्त्य ऋषि
साहित्य	-	अकट्टियम (अगस्त्यम),परिपदाल, मुदुनारै, मुदुकुरूकी, कलरि आविरै

द्वितीय संगम

आयोजन स्थल	-	कपाटपुरम् (अलैवाई)
अध्यक्ष	-	अगस्त्य
ग्रंथ	-	तोल्काप्पियम (व्याकरण एवं काव्य) – सूत्र शैली में
तोल्काप्पियम्		

तोलकाप्पियर अगस्त्य ऋषि के 12 शिष्यों में से एक थे।

तृतीय संगम

आयोजन स्थल	-	उत्तरी मदुरा
अध्यक्ष	-	नक्कीरर
ग्रंथ	-	नेदुन्थोकै, करून्थोकै, नन्निई, एन्कुरून्नूंर, पदित्रपत्तु , नूवैम्बथु, परिपादल, कूथु, वरि, पेरिसै, तथा सित्रिसै।

नोट:– तोल्काप्पियम् सहित तीसरे संगम के सभी ग्रंथों का सम्पादन तिन्नेवेल्ली की **"साउथ इंडिया शैव सिद्धान्त पब्लिशिंग सोसाइटी"** के द्वारा किया गया है।

उपलब्ध संगम साहित्य मुख्य रूप से तमिल भाषा में लिखा गया है और तमिल काव्य में आगम वर्ग की कविताएं मुख्यतः प्रेम से सम्बंधित है।

उपलब्ध संगम साहित्य का विभाजन तीन भागों में किया जा सकता है।

1. पत्थुपात्तु
2. इत्थुथोकै
3. पदिनेन कीलकंकु

पत्थुपात्तु :– दशगीत के नाम से प्रसिद्ध, यह संगम ग्रंथ तृतीय संगम से सम्बन्धित है। इसमें चेर राजाओं तथा चोल राजा करिकाल एवं पांड्य शासक नेडुंजेलियन के विवरण मिलते हैं।

इत्थुथोकै :– इसे अष्टसंग्रह कहा जाता है। यह तीसरे संगम काल में रचा गया, इसमें कुल आठ संग्रह है। जिनमें भूमि के प्रकारों का वर्णन तथा प्रणय गीतों का संकलन है। इनमें संगम युगीन राजाओं की नामावली के साथ-साथ उस समय के जन-जीवन एवं आचार विचार का विवरण भी प्राप्त होता है। इसके प्रमुख भाग निम्नलिखित हैं।

1. **पदित्पत्तु :-** इस ग्रन्थ में आठ चेर शासकों का वर्णन है। इसी पुस्तक में स्त्रियों तथा सैनिकों का शृंगार एवं मृतकों के संस्कार की विधि का वर्णन है।
2. **पारिपादल :-** परिपादल जो तमिल साहित्य का प्रथम संगीत संग्रह है। इसी के गौतम ऋषि की पत्नी का इंद्र द्वारा छल का वर्णन है।
3. **कलथोकै :-** कलिथोकै में विवाहों के प्रकार का वर्णन हैं।
4. **अहनानुरूः-** इसमें मदुरा वासियों के प्रेम प्रसंगो का वर्णन है।

नेडनलवाडै :- यह नक्कीर की रचना है। इसमें युद्ध एवं पति वियोग का मानवीय वर्णन है।

पत्तिनप्पालै :- इसमें चोल बंदरगाह पुहार का उल्लेख है, जिसे कावेरी पट्टनम कहा जाता है। इससे स्पष्ट है कि भिन्न-भिन्न राज्यों से चोलों का व्यापार होता था।

कारनार पत्थु :- इसमें वैदिक यज्ञों का उल्लेख है।

कुरलः- यह लघु उपदेशगीत तिरूवल्लुवर ने उल्लेख किया गया है। यह तमिल ग्रंथ का आधार माना जाता है। इसमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का वर्णन है। इसे तमिल ग्रंथो का बाइबिल कहा जाता था। यह पंचम वेद भी कहलाता है।

आचारकौवे :– इसमें शिव की आराधना का उल्लेख है।

इस काल में पांच प्रसिद्ध महाकाव्य है –

1. शिलप्पादिकारम्
2. मणिमेखलै
3. जीवक चिंतामणि
4. वलय पति
5. कुडलकेशि

शिलप्पादिकारम् :- (नुपुर की कहानी)

लेखक – इलंगोआदिगल (जैन संत) इस पुस्तक में नायक कोवलन और उसकी पत्नी कण्णगी एवं प्रेमिका माध्वी की कहानी है। किसी कारणवश पाण्डय शासक नेडुंजेलियन ने कोवलन को फांसी पर चढ़ा दिया तो कण्णगी ने अपने पति को निर्दोष साबित कर दिया फलतः इसकी ग्लानि में पेडुन नेलियन की मृत्यु हो गयी। कण्णगी ने अपनी क्रोध से पांड्य राज्य को जला दि तथा चेर राज्य चली गयी। इसी कण्णगी के नाम पर बाद में कण्णगी पूजा (पत्नीपूजा) का आरम्भ हुआ। शिलप्पदिकारम् को तमिल साहित्य का इलियट कहा जाता है। इलियट होमर की रचना है।

मणिमेकलैः-

लेखक – शीतलैसन्तनार (बौद्ध व्यापारी)

शिलप्पादिकारम् की कहानी जहां से समाप्त होती है इसकी कहानी वही से शुरू होती हैं। मणिमेकलै शिलप्पादिकारम के नायक कोवलन की दूसरी पत्नी माध्वी वेश्या की पुत्री थी। मणिमेकलै साक्षात देवी के समान जनता के आम सुखों के लिए आम सुखों का त्याग करती हैं और अपनी माँ माध्वी के समान बौद्ध भिक्षुणी बन जाती हैं। इसे तमिल साहित्य का ओडिसी कहा जाता है। ओडिसी की रचना होमर ने की थी।

जीवक चिंतामणिः-

लेखक – तिरूक्कदेवर (जैन मुनि)

13 खण्डों में विभाजित जिसमें 3145 पद हैं इसे मणनूल (विवाहग्रंथ) भी कहा जाता है क्योंकि इसका नायक जीवक 8 शादियां करने के बाद जैन साधु बन जाता है।

मणिमेखलै वेण्वाः-

लेखक – भारती दासन

इसमें मणिमेखलै और माध्वी नामक नायिकाओं का चरित्र-चित्रण है।

संगम कालीन राजनीतिक इतिहास

चोल साम्राज्य :-

स्थान – पेन्नार तथा दक्षिणी वेल्लार नदी के बीच चोलों के विषय में प्रथम जानकारी पाणिनी के अष्टाध्यायी से मिलती है।

प्राचीन राजधानी	–	उत्तरीमलनूर
बाद की राजधानी	–	उरैयुर तथा तंजापुर
	-	पुहार, कोवरीपट्टनम्
राजचिन्ह	-	बाघ
प्रथम शासक	-	उरवप्पहर्रेइलनजेतचेन्नी
राजधानी	-	उरैयूर

यह अपने सुंदर रथों के लिए प्रसिद्ध था।

प्रथम वास्तविक शासक - एलारा

इसने सर्वप्रथम श्रीलंका को जीता

करिकाल – करिकाल तीसरा महत्वपूर्ण शासक था। करिकाल का अर्थ है 'पाँव जला हुआ'।

प्रमुख युद्ध –

1. **वोण्णि का युद्ध** – इस युद्ध में कारिकाल ने पांड्य तथा चेर सहित 11 राजाओं के संघ को हराया। इस युद्ध में चेर शासक ने हारने पर आत्महत्या कर ली। वह चेर शासक था पेरून शासन आदन।
2. **वहैप्परन्दलै का युद्ध** – इस युद्ध में भी कारिकाल विजयी हुआ।
   - शिलप्पदिकारम् में उल्लेख है कि कारिकाल ने हिमालय तक अपनी पताका फहराई लेकिन यह अतिशयोक्ति प्रतीत होती हैं।
   - कारिकाल ने भी श्रीलंका की विजय की थी एवं कावेरीपट्टनम को चोलों की राजधानी बनायी।
   - कारिकाल ने कावेरीपट्टनम में 60 किमी. लम्बा बांध बनवाया। जो नहरों द्वारा सिंचाई में प्रयुक्त होता था। उस बांध का निर्माण श्री लंका युद्ध में पकड़े गये। गुलामों द्वारा किया गया।
   - पुहारपत्तन का निर्माण इसी के समय में हुआ।
   - **करिकाल** ब्रह्मण मतानुयायी था तथा कई वैदिक यज्ञ किये थे।
   - कारिकाल ने पाट्टिनप्पालै के लेखक को 1 लाख 60 हजार स्वर्ण मुद्राएं उपहार में दिया था।
   - इस वंश का अंतिम शासक शेनगणान था। शेनगणान का वास्तविक अर्थ मकड़ा होता है।
   - शेनगणान ने चोल साम्राज्य में कई मंदिरों का निर्माण करवाया था। इसी वंश का एक शासक था। पेरूनर किल्ली जो संभवतः राजसूय यज्ञ किया था।
   - इसके बाद चोल साम्राज्य अंधकार युग में चला गया जिसका पुनः उत्थान नवीं शताब्दी में हुआ।
   - शेन गणान ने चोल साम्राज्य में कई मंदिरों का निर्माण करवाया था। इसी वंश का एक शासक था पेरूनर किल्ली जो संभवतः राजसूय यज्ञ किया था।
   - इसके बाद चोल साम्राज्य अंधकार युग में चला गया जिसका पुनः नवीं शताब्दी में हुआ।

पांड्य राज्य (वैगई नदी जीवन धारा)

राजधानी - मदुरै

राजचिन्ह - मछली

पांड्य राज्य का सबसे पहला उल्लेख मेगास्थनीज की इंडिका में मिलता है। इसमें बताया कि पांड्य राज्य की स्थापना कृष्ण की पुत्री पांड्या ने की थी। यह राज्य मोतियों, उच्चकोटि के वस्त्रों एवं उन्नतशील व्यापार के लिए प्रसिद्ध था।

नेडियोन – नेडियोन पांड्य राज्य का प्रथम शासक था। नेडियोन का शाब्दिक अर्थ है – लम्बा आदमी। नेडियोन ने सागर पूजा आरम्भ करवायी।

पलशालै मुडुकुडमै – पलशालै मुडुकुडमै का शाब्दिक अर्थ है – यज्ञ शालाएं बनाने वाला। अनेक यज्ञों का अनुष्ठान करवाने के कारण इसे पलशालै कहा गया है।

नेडुंजेलियन -

- नेडुंजेलियन ने तलैयालंगानम् के युद्ध में चेर, चोल तथा पांच अन्य राजाओं को हराया।
- शेय नाम चेर शासक को बन्दी बना लिया जिसकी जानकारी मदुरैकांचीग्रंथ से मिलती है।
- इसकी सेना में मोती तथा मछली संग्रह करने वाले पूर्वी समुद्र तटीय लोगों का विशेष महत्व प्रदान किया जाता था।
- नक्कीरर, कल्लादनार, मागुंडिमरूदन जैसे कवि इसके दरबार में निवास करते थे।
- शिलप्पदिकारम की नायिका कण्णगी के पति कोवलन को पायल चुराने के आरोप में मृत्युदंड दे दिया था। चोरी झूठा सिद्ध होने पर प्राणदंड के प्रायश्चित में उसने आत्महत्या कर ली।

वेरिवर शेलिय कोरकै - उपनाम चितिरमरदत्रुत जियवरमरन

- यह नाम इसका इसलिए पड़ा क्योंकि इसकी मृत्यु भित्तियों को देखते समय हो गयी थी।
- यह नेडुंजिलियन का छोटा भाई था।
- इसने सती कण्णगी के सम्मान में विशाल उत्सव का आयोजन किया।
- इसने नवरत्न की उपाधि धारण की।

नोट – पांड्य राजा ने 26 BC में रोम राज्य में एक दूत भेजा था।

चेर राजवंश

राजधानी - वांजिया या करूयूर

राजचिन्ह - धनुष

उदयन जेरल (130 AD) –

- इसे प्रथम ऐतिहासिक चेर शासक माना जाता है।
- संगम कवियों का मानना है कि इसने महाभारत के युद्ध में भाग लिया था तथा सभी योद्धाओं को भोजन कराया था।

नेदुन जेरल आदन (155 AD)-

राजधानी – मरूदै

- ऐसी सूचना मिलती है कि इसने मालाबार तट पर किसी शत्रु को पराजित किया था। कुछ यवन व्यापारियों (राम एवं अरब) व्यापारियों को बन्दी बना लिया था।
- इसने सात राजाओं को हराकर 'अधिराज' की उपाधि धारण की थी।
- ऐसी मान्यता है कि इसने हिमालय तक अपने राज्य का विस्तार करके इमयवरम्बन की उपाधि ग्रहण किया था।
- चोल शासक के विरूद्ध लड़ते हुए इसकी मृत्यु हो गयी और रानियां शती हो गयी। वह चोल शासक था उरवप्पघरेर इलैयन।
- नेदुन जेरल आदन ने कदंब जातियों का दमन किया।

कुट्टवनः-

- कुट्टवन आदन का छोटा भाई था। इसकी सेना में हाथियों की संख्या सर्वाधिक थी। यह कोन्गू के युद्ध में विजय प्राप्त किया।

शेनगुट्टवन अथवा धर्मपरायण कुट्टवनः- इसके यश का गान संगम युग के सुप्रसिद्ध कवि परणर ने किया है।

- अधिराज की उपाधि धारण की।
- इसने पत्नी नामक धार्मिक सम्प्रदाय को समाज में प्रतिष्ठित कराया।
- इसने पवित्र पत्ति की देवी के रूप में मूर्ति बनाकर पूजा कराई थी। शेनगुट्टवन ने इस मूर्ति का पत्थर किसी आर्य राजा को युद्ध में हराकर प्राप्त किया तथा गंगा नदी में स्नान कराने के बाद उसे अपनी राजधानी ले आया था।

- इसे लाल चेर या भला चयन के नाम से भी जाना जाता है।
- इसने कण्णगी पूजा आरम्भ करवायी थी।
- चेर वंश का अंतिम शासक कुडक्को इलंजरेल इरंपोरई है। इसकी राजधानी भी वांजिया करूयूर थी। टाल्मी के उल्लेख से तथा इस नगर के आस-पास अनेक स्थलों से रोमन सिक्के प्राप्त होने से प्रतीत होता है कि वाजियां (करूयूर) चेरों की राजधानी थी।
- 290 AD के एक अन्य चेर **शासक शेय** (हाथी की आँख वाला) था उपाधि – मादरं जेरल इरंपोरई
- अब संभवतः चेर शासको की उपाधि इरंपोरई हो गयी थी।
- नाडुमान अंजी/अडिगयमान ने दक्षिण भारत में सर्वप्रथम गन्ने की खेती आरम्भ करवायी थी।
- ये तगडूर के शासक माने जाते हैं तथा इरंपोरई के विरोधी थी।

ध्येयIAS